

अनुक्रमणिका

समर्पण

iii

प्रकाशकीयम् - प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री

v

Preface - Dr. G. C. Tripathi

vii

भूमिका - प्रोफेसर डॉ. श्री राधावल्लभ त्रिपाठी

ix

मामकीनं निवेदनम् - वसन्तकुमार म. भट्ट

xi

1. पूर्वपीठिका :

पृ. 1 - 50

(1) पांच रंगावृत्तियों की प्रस्तावना:- 1. अभिज्ञानशकुन्तला/अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के पाँच पाठों से सम्बद्ध जिज्ञास्य विषय (पृ.-1), 2. आधुनिक पाठसम्पादनों का परीक्षण (पृ.-3), 3. अभिज्ञान-शकुन्तला के पाठविचलन की आनुक्रमिकता (पृ.-4), 4. पाँच वाचनाओं के पाठ में 'रंगावृत्तियों के (ही) पाठ है' इस मत के साधक-प्रमाण (पृ.-6), 5. इस नाटक के विविध दृश्यों की परिवर्तन-यात्रा का आलेखन (सातों अंकों के पाठभेदों में प्रतिबिम्बित प्रयोग-वैविध्य, एवं रंगावृत्तियों के आन्तर प्रवाहों का चित्र) (पृ.-13 से 38), 6. रंगावृत्तियों के अनुमानित कालखण्ड (पृ.-38), 7. रंगावृत्तियाँ होते हुए भी मूल पाठ की बहुशः सुरक्षा (पृ.-39), 8. 230 वर्षों के दौरान इस नाटक के पाठ की प्रकाशन सम्बन्धी प्रवृत्तियों का विहंगावलोकन (पृ.-40), 9. प्रस्तुत उपक्रम की आवश्यकता एवं स्वरूप (पृ.-42), 10. इस नाटक के तीन शीर्षक (पृ.-45), 11. अभिज्ञानशकुन्तला की वाचनाओं का निर्धारण एवं वंशवृक्ष (पृ.-47), 12. भविष्य के लिए अवशिष्ट कार्य (पृ.-49), 13. प्रस्तुत सम्पादन की पद्धति (पृ.-49-50)।

उत्तर-पीठिका:-

2. मूल नाटक की काश्मीरी रंगावृत्ति का पाठ॥

पृ. 51 से 162

भूमिका:- काश्मीरी रंगावृत्ति के सातों अंकों का मंचनलक्षी विश्लेषण

पृ. 51 से 77

- | | | |
|-----|-----------|------------------|
| (क) | अङ्क - 1, | (पृ. 78 से 89) |
| (ख) | अङ्क - 2, | (पृ. 90 से 97) |
| (ग) | अङ्क - 3, | (पृ. 98 से 109) |
| (घ) | अङ्क - 4, | (पृ. 110 से 121) |
| (ङ) | अङ्क - 5, | (पृ. 122 से 131) |
| (च) | अङ्क - 6, | (पृ. 132 से 149) |
| (छ) | अङ्क - 7, | (पृ. 150 से 162) |

कुल:- 163 से 288
पृ. 163 से 190

3. मैथिली रङ्गावृत्ति का पाठ॥
भूमिका:- मैथिली रङ्गावृत्ति के सातों अंकों का मंचनलक्षी विश्लेषण

- | | |
|--------------|------------------|
| (क) अङ्क - 1 | (पृ. 191 से 204) |
| (ख) अङ्क - 2 | (पृ. 205 से 213) |
| (ग) अङ्क - 3 | (पृ. 214 से 227) |
| (घ) अङ्क - 4 | (पृ. 228 से 241) |
| (ङ) अङ्क - 5 | (पृ. 242 से 254) |
| (च) अङ्क - 6 | (पृ. 255 से 274) |
| (छ) अङ्क - 7 | (पृ. 275 से 288) |

कुल:-289 से 413
पृ. 289 से 310

4. बंगाली रङ्गावृत्ति का पाठ॥
भूमिका:- बंगाली रङ्गावृत्ति के सातों अंकों का मंचनलक्षी विश्लेषण

- | | |
|--------------|------------------|
| (क) अङ्क - 1 | (पृ. 311 से 325) |
| (ख) अङ्क - 2 | (पृ. 326 से 335) |
| (ग) अङ्क - 3 | (पृ. 336 से 350) |
| (घ) अङ्क - 4 | (पृ. 351 से 365) |
| (ङ) अङ्क - 5 | (पृ. 366 से 378) |
| (च) अङ्क - 6 | (पृ. 379 से 399) |
| (छ) अङ्क - 7 | (पृ. 400 से 413) |

5. दाक्षिणात्य रङ्गावृत्ति का पाठ॥
भूमिका:- दाक्षिणात्य रङ्गावृत्ति के सातों अंकों का मंचनलक्षी विश्लेषण

कुल:-414 से 528
पृ. 414 से 437

- | | |
|--------------|------------------|
| (क) अङ्क - 1 | (पृ. 438 से 451) |
| (ख) अङ्क - 2 | (पृ. 452 से 461) |
| (ग) अङ्क - 3 | (पृ. 462 से 471) |
| (घ) अङ्क - 4 | (पृ. 472 से 484) |
| (ङ) अङ्क - 5 | (पृ. 485 से 496) |
| (च) अङ्क - 6 | (पृ. 497 से 515) |
| (छ) अङ्क - 7 | (पृ. 516 से 528) |

6. देवनागरी रंगावृत्ति का पाठः॥
भूमिका:-देवनागरी रंगावृत्ति के सातों अंकों का मंचनलक्षी विश्लेषण
कुल:-529 से 654
पृ. 529 से 555
 (क) अङ्क - 1 (पृ. 556 से 571)
 (ख) अङ्क - 2 (पृ. 572 से 581)
 (ग) अङ्क - 3 (पृ. 582 से 592)
 (घ) अङ्क - 4 (पृ. 593 से 607)
 (ङ) अङ्क - 5 (पृ. 608 से 619)
 (च) अङ्क - 6 (पृ. 620 से 640)
 (छ) अङ्क - 7 (पृ. 641 से 654)
7. पुनर्गठितः प्रथमोऽनुमितश्च पाठः॥
भूमिका:- पुनर्गठित प्रथम अनुमित सातों अंकों का पाठ
कुल:-655 से 748
पृ. 655 से 666
 (क) अङ्कः - 1 (पृ. 667 से 679)
 (ख) अङ्कः - 2 (पृ. 680 से 688)
 (ग) अङ्कः - 3 (पृ. 689 से 699)
 (घ) अङ्कः - 4 (पृ. 700 से 711)
 (ङ) अङ्कः - 5 (पृ. 712 से 720)
 (च) अङ्कः - 6 (पृ. 721 से 736)
 (छ) अङ्कः - 7 (पृ. 737 से 748)
8. परिशिष्ट -1, नाटक की पात्रसृष्टि के नामों की तालिका पृ. 749 से 752
9. परिशिष्ट -2, पाँच रंगावृत्तियों में प्रयुक्त प्राकृत भाषाएँ पृ. 753 से 764
10. परिशिष्ट -3, प्रक्षिप्त श्लोकों की सूची पृ. 765 से 766
11. परिशिष्ट -4, पाँच रंगावृत्तियों में श्लोकों का स्वीकार/अस्वीकार पृ. 767 से 776
12. परिशिष्ट - 5, भरत मुनि एवं कालिदास पृ. 777-784
13. परिशिष्ट -6, शृङ्गारप्रकाश में उद्धृत अभि. शकु. के श्लोकों के सूचितार्थ पृ. 785 से 791
14. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची पृ. 792 से 796